शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ. मीनाक्षी स्वामी के प्रौढ़ साहित्य की कहानियों में व्यक्त ग्रामीण स्त्री की सामाजिक पृष्ठभूमि

रागिनी सिंह
सहायक प्राध्यापक
श्री जयंतीलाल हीराचंद संघवी गुजराती इनोवेटिव
कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स एण्ड साइंस
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

नवसाक्षरों के सन्दर्भ में सरकारी योजनाओं के तहत निर्मित करवाए गए प्रौढ़ साहित्य में डॉ..मीनाक्षी स्वामी का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। उनके प्रौढ़ साहित्य में ग्राम्य जीवन से जुड़ी स्त्रियों की सामाजिक परिस्थितियों ,समस्याओं व सकारात्मक बदलावों को सजीव अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। उन्होंने स्वयं के अनुभवों और सौन्दर्यानुभूति से ग्राम्य जीवन के सामाजिक यथार्थ को पूरी ईमानदारी और शिद्दत के साथ कहानियों में बुना है। जिससे उनका प्रौढ़ साहित्य नवसाक्षरों के लिए रुचिकर बनकर अपने लक्ष्य की पूर्ति में सहायक बन सका है। साहित्य की यही भूमिका साहित्य को महत्वपूर्ण बनाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ.मीनाक्षी स्वामी द्वारा लिखित प्रौढ़ साहित्य की प्रतिनिधि कहानियों में उपस्थित ग्रामीण स्त्री के संघर्ष और सफलताओं को खोजने का प्रयत्न किया गया है। जिसमें महिलासशक्तिकरण, जागरूकता, रूढ़िवादिता आदि का भाव प्रमुख है।

भूमिका

ग्राम्यजीवन में स्त्रियां आज भी अनेक समस्याओं से त्रस्त हैं। उन्हें जीवन भर अपने परिजनों के आदेशों का पालन करना ही होता है। उनकी अपनी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है। यहाँ तक कि उसकी स्वयं की कोख पर भी उसका अधिकार नहीं होता। वे रूढ़िवादी मानसिकता को पीढ़ी दर पीढ़ी वहन करते हुए अपना पूरा जीवन खपा देती हैं। वे खेत खलिहानों और पारिवारिक काम के बोझ से दबे रह कर भी अपना मुँह नहीं खोल पातीं और जीवन भर शोषित होती रहती हैं। डॉ.मीनाक्षी स्वामी ने अपनी कहानियों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की स्त्रियों में आ रहे सकारात्मक बदलाव को अभिव्यक्त किया है। उनमें उत्पन्न आत्मविश्वास और आत्मनिर्भर होने का भाव भी उनकी रचनाओं में स्पष्ट हुआ है। डॉ..स्वामी ने ग्रामीण महिलाओं में आई जागरूकता को भी अपनी कहानियों में व्यक्त किया है । उनके प्रौढ़ साहित्य में महिलाओं के जीवन की छोटी बड़ी समस्याओं व अनुभवों को अभिव्यक्ति मिली है । जो महिलाओं को दिशाबोध देकर उनके जीवन में बदलाव लाने का एक माध्यम बन सकती है। "साहित्य सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। समाज के सम्मुख आने वाली समस्याओं को सुलझाने में वह उसका मार्गदर्शन भी करता है। साहित्य की महत्ता केवल उसके मनोहर शिल्प विधान तथा सुष्ठु शैली के आधार ही स्वीकार नहीं की जा सकती

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बल्कि उसका सामाजिक मूल्य है और जीवन से उसका निकट सम्बन्ध है।"1

महिला सशक्तिकरण

महिला स शक्तिकरण की आवाज बुलंद करते हुए मीनाक्षी जी ने 'साहब नहीं आए ' कृति में पुलिस के अत्याचार के समक्ष न झुकने को दृढ़ संकल्पित ,गोमती के चरित्र को रेखांकित किया है। उसकी दृढ़ता और समझदारी से उसके घर आए पुलिसवाले को बेरंग लौटना पड़ता है।

"पुलिसवाला बोला-आपसे पूछताछ करनी है। अभी थाने चलना पड़ेगा।"

गोमती ने कहा- " मैं आपके साथ नहीं जा सकती।" 2

ग्रामीण महिला को इस प्रकार का साहस और बल प्रदान करने के लिए डॉ. स्वामी ने पुस्तक में कई छोटे-छोटे उदाहरणों द्वारा अपनी बात को स्पष्ट किया है।उन्होंने महिलाओं के सन्दर्भ में बने कानूनों पर भी प्रका श डालने का प्रयास किया है। जैसे - "यदि कभी किसी कारण से महिला थाने पर जाती भी है तो उसे सूरज डूबने से लेकर सूरज उगने तक थाने पर नहीं रोका जा सकता।"3

डॉ. मीनाक्षी स्वामी ने 'साहसी कमला' कहानी में कमला के उदात्त चरित्र और बहादुरी को रेखांकित किया है। लेखिका यह स्पष्ट करना चाहती है कि ग्रामीण क्षेत्र की स्त्रियों को अपनी रक्षा के लिए स्वयं ही आगे आना होगा और अपराधियों को उनके किए की सजा दिलानी होगी। कमला ने उसका बलात्कार करने वालों को सामने लाकर अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को कड़ा जवाब दिया है। "पंचायत ने कमला की तारीफ की। सचमुच ही कमला समझदार थी। उसने बात नहीं छुपाई। किसी से डरी घबराई भी नहीं। वह जानती थी चुप रहने से कामता और यदु की हिम्मत बढ़ेगी। उन्हें सजा दिलाना जरूरी है। कमला ने कोशिश की। उसे सफलता भी मिली।"4

जागरूकता

डॉ. मीनाक्षी स्वामी , के प्रौढ़ साहित्य की कहानियों में जागरूकता का भाव मुख्य रूप से व्यक्त हुआ है , जो ग्रामीण स्त्रियों की दशा का सजीव वर्णन करता है। लेखिका स्त्रियों में इस विश्वास को जागृत करना चाहती हैं कि वे स्वयं के प्रयासों और जागरूकता से विषम परिस्थतियों से लड़ सकती हैं। वर्तमान परिदृश्य में किसी भी क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को कमतर नहीं आंका जा सकता। महिलाएं घर और परिवार की धुरी होती हैं। उनके सजग और सचेत रहने पर ही परिवार की खुशहाली और सुरक्षा निर्भर करती है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति सजग करने तथा हर क्षेत्र में नवीन दृष्टि प्रदान करने के उद्दे श्य से डॉ.स्वामी ने अनेक कहानियों की रचना की है। जिसमें उन्होंने महिलाओं के अधिकारों ,स्वास्थ्य ,राजनैतिक दृष्टिकोण आदि विषयों को प्रमुखता से अपनी रचनाओं में जगह दी है।

इसी कथ्य को अभिव्यक्त करती है उनकी कहानी 'मुस्कान' जिसमें पति की आकस्मिक मृत्यु से जमुना पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है। लेखिका ने कहानी में एक स्त्री की पीड़ा और मनोदषा का बहुत ही सजीव वर्णन किया है-

"एक तो आदमी के मरने का दुख , पैसों की परेशानी, ऊपर से कड़ी मेहनत। बेचारी जमुना कमजोर और बीमार रहने लगी। हमे शा खिलखिलाती रहने वाली जमुना मुस्कराना तक भूल गई। वह चिड़चिड़ी भी हो गई थी।"5

इसी लाचार और कमजोर जमुना के मुख पर फिर से मुस्कान लौट आती है जब वह अपने हक की लड़ाई जीत जाती है।

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

महिलाओं में चेतना व विचार शीलता पैदा करने के लिए मीनाक्षी जी ने अपनी कहानियों में इस पक्ष को उजागर किया है कि महिला की इच्छा के विरूद्ध उसे गर्भपात करवाने को मजबूर नहीं किया जा सकता। भ्रूण की जाँच करवाना गैर कानूनी है। भ्रूण के कन्या होने पर करवाये जाने वाले बार-बार के गर्भपात से स्त्री का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। बिना किसी शारीरिक समस्या के भ्रूण की जाँच करवाना गैर कानूनी है। इस चेतना की अभिव्यक्ति डॉ. मीनाक्षी स्वामी ने 'बहूरानी' कहानी में की है- "जमुना बोली -हाँ ,सुना तो मैंने भी है। गर्भ में बेटे -बेटी का पता लगाना गैर कानूनी है। जाँ च करने और करवाने वाले दोनों को सजा हो सकती है।"6

अपनी एक अन्य रचना 'निश्चय' में डॉ.मीनाक्षी स्वामी ने जनसंख्या वृद्धि के नकारात्मक प्रभावों को कहानी में रेखांकित किया है। गांवों में अब भी स्त्रियों मे इस विषय को लेकर जागरूकता की कमी है। जिसके परिणाम स्वरूप जहाँ उन्हें व उनके परिवारवालों को आर्थिक व सामाजिक परेशानियों से दो -चार होना पड़ता है , वहीं प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर घटती जा रही स्थिति का भी सामना करना पड़ सकता है। इसी चिंताजनक स्थिति को व्यक्त करते हुए वे कहती हैं- "आबादी ऐसी ही गति से बढ़ती रही तो क्या होगा ? एक दिन धरती पर न ता अन्न बचेगा। न रहने की जगह। यहां तक कि पीने का पानी और साँस लेने के लिए ताजी हवा भी नहीं बचेगी।"7

डॉ.स्वामी ने प्रौढ़ साहित्य की कहानियों द्वारा ग्रामीण स्त्रियों में राजनीतिक जागरूकता जगाने का भी प्रयास किया है कि लोकतंत्र में अपने मताधिकार के प्रयोग से वे सही नेतृत्व का चुनाव करने में सक्षम हैं। अपनी रचना में वे इस बात का समर्थन करती हैं कि पाँच साल के लिए चुनी जाने वाली सरकार यदि असावधानी से चुनी जाती है तो हमारा ही नुकसान होता है। इसीलिए समय रहते हमें अपने विवेक का उपयोग कर नेता का चुनाव करना चहिए। बिना किसी लालच और दबाव में चुना गया व्यक्ति ही दे शहित में कार्य कर सकता है। इसी के साथ अपाहिज और वृद्ध लोगों के लिए भी मत देने की उचित व्यवस्था मतदान केन्द्रों में की जाती है।

डॉ.स्वामी ने अपनी कृति 'हमारा राज है' में इसी वस्तुस्थिति को स्पष्ट किया है। "जमुना काकी - मैं ठहरी बूढ़ी लाचार। मुझे दिखता नहीं मैं वोट देने गई ही नहीं।"

मदारी - "माताजी सरकार ने इसका भी इंतजाम किया है। भरोसे का आदमी अपने साथ में ले जाओ। आप उसे बता देना वो बटन दबा देगा।"8

डॉ.स्वामी ने अपनी एक अन्य कृति 'किसी से न कहना' में भी ग्रामीण स्त्रियों में मतदान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया है।

रूढ़िवादिता

ग्राम्य अंचल की स्त्रियों का जीवन बहुत सी विषमताओं और अभावों के साथ गुजरता है। उन्हें न तो पीहर में और न ससुराल में वो सम्मान और अधिकार मिलते हैं जिनकी वे अधिकारी है। फिर भी बिना किसी शिकायत के वे परिवारवालों की रूढ़िवादी सोच के अनुसार स्वयं को ढालती चली जाती हैं। स्त्रियों की यह सोच उचित नहीं है। इसका समाधान निकालना आवश्यक है वरना स्त्रियाँ इसी तरह शोषित होती रहेंगी। अपनी कहानी के माध्यम से डॉ.मिनाक्षी स्वामी ने इसी संदेश को व्यक्त किया है कि स्त्री के जीवन का अंधेरा प्रेम, विश्वास और सहानुभूति के उजाले से ही दूर हो सकता है। इसी विचार को उन्होंने

कहानी 'काम का बंटवारा ' में व्यक्त किया है , "हमारे यहां हर घर में यही हाल है। कोई नहीं सोचता कि बेचारी गृहिणी सुबह से रात तक काम में लगी रह कर सबकी सेवा करती है। वह दोहरा काम करती है। फिर भी घर में न कोई उसकी सेहत का ध्यान रखता है न उसके काम को महत्व देता है।"9

आधुनिकता के इस दौर में ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं में आज भी रूढ़िवादी सोच के कारण उनका विकास अवरूद्ध हुआ है। महिला विकास की बात करने वाले लोग अपने ही घर की स्त्रियों पर अत्याचार करने से नहीं चूकते। स्त्री को स्वयं कोई निर्णय लेने के अधिकार से वंचित कर उसका शोषणकरते हैं। इसी मानसिकता की शिकार है 'गोपीनाथ की भूल' कहानी की नायिका सुनयना जिसका पति और सास दो बेटियों के जन्म के बाद हर समय उसे खरी खोटी सुनाते रहते हैं। "काशी बाई कहती- "इसकी कोख पर तो बेटी का ठप्पा पड़ा है। इसे छोड़ मैं तेरी दूसरी शादी करूंगी।"

गोपीनाथ भी काशीबाई की बातों में आता गया। वह भी सुनयना से बुरा बर्ताव करता। बात-बात पर चिढ़ता, खीजता, गुस्सा करता। बेटी होने का ताना देता। कभी-कभी सुनयना पर हाथ भी उठाता। बेटियों को भी डाँटता, मारता।"10

अपनी एक रचना 'घर लौट चले ' में भी डॉ.. स्वामी ने ग्रामीण जीवन में रूढ़िवादी व सोच के कारण अपने अस्तित्व से संघर्ष करती एक स्त्री की दशा को अभिव्यक्ति प्रदान की है। मातृत्व सुख से वंचित एक विवाहित स्त्री को ही दोषी ठहराया जाता है। जबकि पुरूष भी उसकी इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है। इस दृष्टिकोण को पात्रों के माध्यम से बड़ी गहराई के साथ व्यक्त करते हुए वे लिखती हैं , "देखते देखते दो साल बीत गए। गंगा पोते की आशा करने लगी। राधा के साथ ब्याही दूसरी बहुओं की गोद भर चुकी थी। सबके आंगन चहक रहे थे। राधा की गोद अभी खाली ही थी। उसका आंगन सूना था।"11

पोते की चाह में मानवता भूले, सास और पति के बुरे व्यवहार से त्रस्त होकर राधा ससुराल की दहलीज लांघकर अपने माता-पिता के पास चली जाती है, जो उसकी दृढ़ता का प्रतीक है।

निष्कर्ष

डॉ. मीनाक्षी स्वामी द्वारा रचित प्रौढ़ साहित्य की कहानियों के विवेचन से विदित होता है कि लेखिका ने बड़ी गहराई से ग्रामीण जीवन में निहित स्त्री के सत्य को सामने लाने का सफल प्रयास किया है। उनकी स्त्री पात्र थोपे हुए बंधनों से मुक्त होकर अपना नया क्षितिज तलाषने की क्षमता रखती है। वह पुरानी दकियानूसी सोच से आगे बढ़ कर अपने हक के लिए लड़ने का हौसला रखती है। ग्रामीण परिवेश में रह कर भी राजनीतिक हलचल को समझकर , लोकतंत्र में हिस्सेदारी निभा सकती है। इन सभी बिंदुओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि डॉ.मीनाक्षी स्वामी की इन कहानियों में ग्रामीण स्त्री की सामाजिक पृष्ठभूमि की अभिव्यक्ति सरल भाषा विधान के साथ प्रभावी रूप में हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.आधुनिक सामाजिक आन्दोलन और आधुनिक हिंदी साहित्य - कृष्ण बिहारी मिश्र , आर्य बुक डिपो, प्रथम संस्करण 1972, प्रस्तावना

2.साहब नहीं आए , डॉ. मीनाक्षी स्वामी , साक्षरता निकेतन, प्रथम संस्करण -2001,पृष्ठ 1

3.साहब नहीं आए, डॉ. मीनाक्षी स्वामी , साक्षरा निकेतन, प्रथम संस्करण -2001,पृष्ठ 5

4.साहसी कमला, डॉ. मीनाक्षी स्वामी, हिमाचल पुस्तक भण्डार, प्रथम संस्करण -1998,पृष्ठ 9

5.मुस्कान, डॉ. मीनाक्षी स्वामी , राज्य संसाधन केन्द्र प्रौढ़ शिक्षा इन्दौर, प्रथम संस्करण 1994,पृष्ठ 8

6..बहूरानी, डॉ.मीनाक्षी स्वामी, प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, प्रथम संस्करण 2007 पृष्ठ 12

7.निश्चय, डॉ. मीनाक्षी स्वामी , राज्य संसाधन केन्द्र प्रौढ़ शिक्षा इन्दौर, प्रथम संस्करण 1992,पृष्ठ 9

8.हमारा राज है , डॉ. मीनाक्षी स्वामी, राज्य संसाधन केन्द्र प्रौढ़ शिक्षा इन्दौर, प्रथम संस्करण, 2013,पृष्ठ 20

9.काम का बंटवारा, डॉ..मीनाक्षी स्वामी, राज्य संसाधन केन्द्र प्रौढ़ शिक्षा इन्दौर, प्रथम संस्करण, 1992, पृष्ठ 12

10.गोपीनाथ की भूल , डॉ. मीनाक्षी स्वामी , विकास पेपर बैक्स, प्रथम संस्करण, 1992, पृष्ठ 6

11.घर लौट चले , डॉ.मीनाक्षी स्वामी , नेशनल बुक ट्रस्ट, पहला संस्करण ,1996, पृष्ठ 6